राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बृहस्पतिवार • 20 मई • 2021 5

फसलों की गुणवत्ता को अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन

डॉ. एसबी पॉल।

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय से संबद्ध असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एसबी पाल ने किसानों को फसलों की गुणवता हेतु एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि लगातार रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। इसके दृष्टिगत पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है।

सीएसए के कृषि वैज्ञानिक की सलाह

उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय द्वारा की जा सकती है। फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे हवा एवं जल से प्राप्त करते है। तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस पोटाश कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर, आयरन, मैग्नीज, जिंक, मालिबडेनम व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते है। इसलिए मृदा में इन सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे, इसके लिए जरूरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए। विद्यालय प्रवक्ता एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैव उर्वरक, फसल अवशेष, जीवाणु खाद एवं हरी खादों का प्रयोग किसानों को मृदा में करना चाहिए। इससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सकेगा। उन्होंने कहा कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा स्वास्थ्य एवं मृदा उत्पादकता कायम रहेगी। इससे फसल उत्पादन में विषैलापन भी कम हो जाता है। यह पर्यावरण अनुकूल होने के साथ ही गुणवत्ता युक्त उत्पाद देता है व फसल उत्पादन लागत में भी कमी आती है।

आज
कानपुर
20 मई 2021 4

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से कायम रहती है मृदा स्वास्थ्य व उत्पादकता

कानपुर, 19 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर.सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एस. बी. पाल ने फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर जानकारी दी है। डॉ. पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय के द्वारा की जा सकती है। वैज्ञानिक ने बताया कि फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे हवा एवं जल से प्राप्त करते है तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम, मैग्निशियम, सल्फर,आयरन, मैग्नीज, जिंक, बोरान,मालिब्डेनम, व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते हैं । इसलिए मृदा में इन सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे। इसके लिए जरूरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए सीएसए के मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैव उर्वरक, फसल अवशेष,जीवाणु खाद एवं हरी खादों का किसान भाई मृदा में प्रयोग करें। जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सके। डॉ खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा स्वास्थ्य तथा मृदा उत्पादकता कायम बनी रहती है। फसल उत्पादन में विषैला पन कम हो जाता है। उन्होंने कहा कि एकीकृत पद्धति से गुणवत्ता युक्त उत्पाद एवं पर्यावरण के अनुकूल है साथ ही साथ फसल उत्पादन के लागत में कमी आती है।

डॉ. एस. बी. पाल

दैनिक जागरण
कानपुर, 20 मई, 2021
4

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से बढ़ाएं फसलों की गुणवत्ता

कानपुर : चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने बुधवार को किसानों के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन की सलाह जारी की।

डॉ. एसबी पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है। पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय से की जा सकती है। जासं

अमर उजाला
बृहस्पतिवार • 20.05.2021
05
kanpur.amarujala.com

रासायनिक उर्वरक कम कर रहे मिट्टी की गुणवत्ता

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एसबी पाल ने बुधवार को फसलों की गुणवत्ता के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि मिट्टी में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता और गुणवत्ता में गिरावट हो रही है। फसल के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। बेहतर फसल व मिट्टी के उत्तम स्वास्थ्य उत्तम के लिए कार्बनिक और अकार्बनिक खादों का प्रयोग करना चाहिए। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि जैव उर्वरक, फसल अवशेष, जीवाणु खाद और हरी खादों के प्रयोग से पैदावार बढ़ाई जा सकती है। (संवाद)

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

● वर्ष : 10 ● अंक 32 ● कानपुर गुरुवार 20 मई 2021 ● पृष्ठ: 8 ● मूल्य: 1.00 रु.

फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधनः डॉ0 एस0बी0 पाल

कानपुर- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ0 डी0आर0 सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 एस0बी0 पाल ने फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर जानकारी दी है डॉ0 पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है उन्होंने कहा कि पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय के द्वारा की जा सकती है डॉ0 पाल ने बताया कि फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे हवा एवं जल से प्राप्त करते हैं तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैलशियम, मैग्निशियम, सल्फर, आयरन, मैग्नीज, जिंक, बोरान, मॉलिब्डेनम, व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते हैं इसलिए मृदा में इन सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे इसके लिए जरुरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए विश्वविद्यालय की मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैव उर्वरक, फसल अवशेष, जीवाणु खाद एवं हरी खादों का किसान भाई मृदा में प्रयोग करें जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सके डॉ0 खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा स्वास्थ्य तथा मृदा उत्पादकता कायम बनी रहती है इसके साथ ही फसल उत्पादन में विषैला पन कम हो जाता है उन्होंने कहा कि एकीकृत पद्धति से गुणवत्ता युक्त उत्पाद एवं पर्यावरण के अनुकूल है साथ ही साथ फसल उत्पादन के लागत में कमी आती है।

फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन: डॉ. एस. बी. पाल

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डी.आर.सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एस. बी. पाल ने फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर जानकारी दी है। डॉक्टर पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय के द्वारा की जा सकती है। डॉक्टर पाल ने बताया कि फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे वायु एवं जल से प्राप्त करते हैं। तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर,आयरन, मैंगनीज, जिंक, बोरान,मॉलिब्डेनम, व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते हैं इसलिए मृदा में इन सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे इसके लिए जरूरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए । विश्वविद्यालय की मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैव उर्वरक, फसल अवशेष,जीवाणु खाद एवं हरी खादों का किसान मृदा में प्रयोग करें। जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सके।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः12 | अंकः142 | देहरादून, बुधवार, 19 मई, 2021 | पृष्ठः08

फसलों की गुणवत्ता के लिए अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ० डी०आर० सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ० एस०बी० पाल ने फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर जानकारी दी है डॉ० पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है उन्होंने कहा कि पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय के द्वारा की जा सकती है डॉ० पाल ने बताया कि फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है।इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे हवा एवं जल से प्राप्त करते हैं तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैलशियम, मैग्निशियम, सल्फर, आयरन, मैग्नीज, जिंक, बोरान, मॉलिब्डेनम, व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते है इसलिए मृदा में इन

सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे इसके लिए जरूरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए विश्वविद्यालय की मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैव उर्वरक, फसल अवशेष, जीवाणु खाद एवं हरी खादों का किसान भाई मृदा में प्रयोग करें जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सके डॉ० खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा स्वास्थ्य तथा मृदा उत्पादकता कायम बनी रहती है इसके साथ ही फसल उत्पादन में विषैला पन कम हो जाता है उन्होंने कहा कि एकीकृ त पद्धति से गुणवत्ता युक्त उत्पाद एवं पर्यावरण के अनुकूल है साथ ही साथ फसल उत्पादन के लागत में कमी आती है।

@gmail.com, vidhankesarinews@gmail.com

हिन्दी दैनिक

विधान केसरी

...खबर सिर्फ जनहित के लिए

लखनऊ संस्करण, गुरुवार 20 मई 2021 (वर्ष-8 अंक 333), मूल्य- 2.00 रुपये पृष्ठ-16

दिन रात एक कर लोगो की... पेज-3

डीआईजी ने जनपद सम्भल का... पेज-07

महामारी में कहाँ दुब

फसलों की गुणवत्ता के लिए अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन: डॉ. पाल

कानपुर (विधान केसरी) । सीएसए के प्रसार निदेशालय में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. एस. बी. पाल ने फसलों की गुणवत्ता हेतु अपनाएं एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर जानकारी दी है। डॉक्टर पाल ने बताया कि मृदा में लगातार रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में गिरावट तथा मानव शरीर एवं पर्यावरण प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए मृदा में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन करना अति आवश्यक हो गया है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्वों की पूर्ति सभी उपलब्ध संसाधनों के समन्वय के द्वारा की जा सकती है। डॉक्टर पाल ने बताया कि फसलों के संपूर्ण विकास के लिए 17 पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है इनमें से तीन पोषक तत्व कार्बन, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन पौधे हवा एवं जल से प्राप्त करते हैं, तथा अन्य पोषक तत्व नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, कैलशियम, मैग्निशियम, सल्फर, आयरन, मैग्नीज, जिंक, बोरान, मॉलिब्डेनम व निकिल पौधे मृदा से प्राप्त करते हैं इसलिए मृदा में इन सभी पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए उन्होंने बताया कि अधिक से अधिक फसल उपज मिल सके व मृदा स्वास्थ्य बरकरार बनी रहे इसके लिए जरूरी है कि कार्बनिक एवं अकार्बनिक खादों का समन्वित प्रयोग किया जाए। विश्वविद्यालय की मीडिया प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ

खलील खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन के लिए रासायनिक खादों के अतिरिक्त जैवउर्वरक,फसल अवशेष, जीवाणु खाद एवं हरी खादों का जिससे संतुलित उर्वरक प्रबंधन हो सके डॉ खान ने बताया कि एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा स्वास्थ्य तथा मृदा उत्पादकता कायम बनी रहती है। इसके साथ ही फसल उत्पादन में विषैला पन कम हो जाता है। उन्होंने कहा कि एकीकृत पद्धति से गुणवत्ता युक्त उत्पाद एवं पर्यावरण के अनुकूल है साथ ही साथ फसल उत्पादन के लागत में कमी आती है।